Roll No. ..... Total Pages : 6

5385-A2

M.A. (Final) Examination, 2016

HINDI LITERATURE

Paper–V

(रचनाकार का विशेष अध्ययन)

(सुभद्राकुमारी चौहान)

Time : Three Hours
Maximum Marks : 100

खण्ड–अ [Marks : 20

सभी प्रश्न अनिवार्य हैं। प्रत्येक प्रश्न का उत्तर 50 शब्दों से अधिक न हो। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।

खण्ड–ब [Marks : 50

प्रत्येक इकाई से **एक-एक** प्रश्न चुनते हुए, कुल **पाँच** प्रश्न कीजिए। प्रत्येक प्रश्न का उत्तर 250 शब्दों से अधिक न हो। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।

खण्ड–स [Marks : 30

कोई **दो** प्रश्न कीजिए। प्रत्येक प्रश्न का उत्तर 300 शब्दों से अधिक न हो। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।

खण्ड–अ

1. निम्नलिखित सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

इकाई–I

(क) सुभद्राकुमारी चौहान का जन्म एवं मृत्यु काल लिखिए।

(ख) 'राष्ट्रीय बसंत की प्रथम कोकिला' के रूप में किसे जाना जाता है?

इकाई–II

(ग) सुभद्राकुमारी चौहान किसके आह्वान पर स्वाधीनता संग्राम से जुड़ीं?

(घ) सुभद्राकुमारी चौहान रचित किन्हीं दो प्रसिद्ध कविताओं के नाम लिखो।

इकाई–III

(ङ) 'सुभद्राकुमारी चौहान की श्रेष्ठ कविताएँ' रचना की संपादक का नाम लिखो।

(च) 'सतयुग त्रेता देता बीता, यश-सुरभि राम की फैलाता,
द्वापर भी आया, गया कृष्ण की नीति-कुशलता दरशाता।'
किस कविता की पंक्तियाँ हैं?

इकाई–IV

(छ) सुभद्रा कुमारी चौहान ने किसे 'गोदी की शोभा' बताया है?

(ज) बालिका विषयक कविताओं के नाम लिखिए।

इकाई–V

(झ) छाया, प्रमोद, सुमित्रा, राजरानी किस कहानी के पात्र हैं?

(ञ) "मैं नारी होकर भी सब कुछ सहने को तैयार हूँ। आप तो पुरुष हैं। कठिनाइयों से लड़ने के लिए ही आपका जीवन है।" यह किसका कथन है?

खण्ड–ब

इकाई–I

2. सुभद्राकुमारी चौहान के व्यक्तित्व को स्पष्ट कीजिए।

3. सुभद्राकुमारी चौहान के कवि व्यक्तित्व को समझाइए।

इकाई–II

4. निम्नलिखित गद्यांश की व्याख्या कीजिए :

उन्हें उसके ऊपर विश्वास न रह गया था। उसकी हर एक भावभंगी में उन्हें कुछ छल, कुछ धोखा दृष्टिगोचर होता था। उन्होंने दासी के आने का कारण पूछा और छाया के सच-सच कह देने पर भी वे

विश्वास न कर सके। क्रोध में उन्मत्त से हो रहे थे, क्रोध के साथ बोले– छाया तुम जाओ, जाओ अपनी माँ के साथ रहो, मेरा पिंड छोड़ दो, तुम्हारे साथ रहने से मुझे कष्ट भर होता है और कुछ नहीं। मैं अपने आप तो तुम्हें छोड़ नहीं सकता। तुम अपने आप ही अपनी माँ के पास चली जाओ तो मेरे ऊपर किसी प्रकार की जिम्मेदारी न रह जाएगी। मेरा कहना मानो, मुझे इस बंधन से मुक्त कर दो छाया। तुम भी सुख से रह सकोगी, मैं भी सुख से रहूँगा।

5. निम्नलिखित गद्यांश की व्याख्या कीजिए :

'आप क्या समझते हैं कि मैं किसी और से विवाह करूँगी? यह कभी न होगा। मैंने एक बार जिससे प्रेम किया, उसी से प्रेम करती हुई मिट जाऊँगी। हिन्दू नारी प्रेम करना जानती है। वह प्रेम का प्रतिदान नहीं चाहती। मैंने प्रेम किया, करती रहूँगी। यह बात दूसरी है कि प्रेम की प्रतिमा तक मेरी पहुँच न हो सकेगी। और यह तो अपना-अपना भाग्य है।'

इकाई–III

6. निम्नलिखित पद्यांश की व्याख्या कीजिए :

इस तरह उपेक्षा मेरी, क्यों करते हो मतवाले।
आशा के कितने अंकुर, मैंने हैं उर में पाले।।
विश्वास वारि से उनको, मैंने हैं सींच बढ़ाए।
निर्मल निकुंज में मन के रहती हूँ सदा छिपाए।।
मेरी सांसों की लू से कुछ आंच न उनमें आए।
मेरे अन्तर की ज्वाला उनको न कभी झुलसाए।।

कितने प्रयत्न से उनको मैं हृदय नीड़ में अपने।
बढ़ते लख खुश होती थी देखा करती थी सपने।।
इस भांति उपेक्षा मेरी करके मेरी अवहेला।
तुमने आशा की कलियाँ मसलीं खिलने की बेला।।

7. निम्नलिखित पद्यांश की व्याख्या कीजिए :

तुम सबके भगवान, कहो मंदिर में भेदभाव कैसा?
हे मेरे पाषाण पसीजो बोलो क्यों होता ऐसा?
मैं गरीबिनी किसी तरह से पूजा का सामान जुटाती।
बड़ी साध से तुझे पूजने मंदिर के द्वारे तक आती।।

इकाई–IV

8. 'सहजता सुभद्रा जी की कविता का प्राण है।' पठित कविताओं के आधार पर उक्त तथ्य को स्पष्ट कीजिए।

9. पठित कविताओं के आधार पर राष्ट्रीय चेतना को समझाइए।

इकाई–V

10. 'सुभद्रा जी की कहानियों में स्त्री संवेदना मुखर हुई है।' विवेचना कीजिए।

11. 'पवित्र ईर्ष्या' कहानी की संवेदना को स्पष्ट कीजिए।

खण्ड–स

इकाई–I

12. सुभद्राकुमारी चौहान के राजनीतिक व्यक्तित्व को विस्तार से विवेचित कीजिए।

इकाई–II

13. सुभद्रा जी की कहानियों का समग्र मूल्यांकन कीजिए।

इकाई–III

14. 'हिन्दी साहित्य में कदाचित पहली बार प्रणय के मानव-संबंध को उनकी उचित भूमिका-प्रसंग में रखकर देखा गया है।..... हिन्दी में ये कविताएँ एक नवीन दृश्य उपस्थित करती हैं।' इस कथन को तर्क सहित प्रमाणित कीजिए।

इकाई–IV

15. सुभद्रा जी की कहानियों की प्रासंगिकता को स्पष्ट कीजिए।

इकाई–V

16. सुभद्रा जी की कविताओं के कला-पक्ष को विस्तार से समझाइए।